अध्ययन सामग्री
एम० ए० सेमेस्टर -2
CC - IX
डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज
वी० कुं० सिं० वि०, आरा

21.07.20

उत्तररामचरितम्

भवभूति का सामान्य परिचय

भवभूति संस्कृत-नाटक-साहित्य के ऐसे जाज्ज्वल्यमान नक्षत्र हैं जिनकी ज्योति चतुर्दिक प्रसृत होती तथा आलोक फैलाती चली आ रही है। वे बने मार्ग पर चलने वाले नहीं हैं अपितु स्वयं मार्ग का निर्माण करते हैं। संस्कृत नाट्य साहित्य के वे गतिप्रदाता हैं तथा साथ-ही-साथ उन्होंने उसे एक नये मार्ग की ओर उन्मुख किया है। कालिदास जैसे रससिद्ध कवि तथा नाटककार के सामने यदि कोई तुलनीय हो सकता है तो वह महाकवि भवभूति ही। महामहोपाध्याय काणे के शब्दों में संस्कृत नाट्य तथा काव्यसाहित्य के नक्षत्रमण्डल में भवभूति सर्वाधिक देदीप्यमान नक्षत्रों में से एक हैं।

महाकवि भवभूति ने अपना परिचय अपनी रचनाओं में दिया है। 'महावीरचरित' में उनका परिचय मिलता है, जिसके अनुसार उनके पूर्वज दक्षिणापथ में स्थित विदर्भप्रदेश के पद्मपुर में निवास करते थे। उनके पितामह का नाम भट्ट गोपाल तथा पिता का नाम नीलकण्ठ था। उनकी माँ का नाम जातुकर्णी था। उनका जन्म कश्यपवंशीय उदुम्बर नामक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पूर्वज कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा के मानने वाले थे। इनके पूर्वज अपने सदाचार तथा वेदाध्ययन के लिए सर्वत्र प्रसिद्ध थे;

अग्निचर्या में तत्पर, सोमयज्ञ करने वाले ब्रह्मवादी तथा श्रौत के परंवेत्ता थे। भवभूति के पूर्वज उच्चकोटि के विद्वान् थे। स्वयं भवभूति भी अपनी विद्वत्ता के लिए प्रसिद्ध थे। मालतीमाधव के एक श्लोक के अनुसार वे वेद, उपनिषद्, सांख्य, योग तथा साहित्य के परम ज्ञाता थे। अपने नाटकों में उन्होंने अपने आपको 'पद-वाक्यप्रमाणज्ञः' कहा है जिससे प्रतीत होता है कि वे व्याकरण, न्याय तथा मीमांसा के परम ज्ञाता थे।

भवभूति का प्रारम्भिक नाम 'श्रीकण्ठ' था और साहित्यिक नाम भवभूति था जो कि 'गिरिजायाः कुचौ वन्दे-भवभूति-सितानना' तथा 'साम्बा पुनातु भवभूतिपवित्रमूर्तिः' जैसे पद्यों की रचना करने से पड़ा था। वैसे नाम के सम्बन्ध में विद्वान् एकमत नहीं हैं। 'उत्तररामचरितम्' के प्रथम अंक के प्रारम्भ में 'श्रीकण्ठः पदलालित्यः पदवाक्यप्रमाणज्ञो भवभूतिर्नाम' आदि उल्लेखों से ज्ञात होता है कि उनका वास्तविक नाम भवभूति ही था, 'श्रीकण्ठ' उनकी उपाधि थी। टीकाकारों ने इसकी व्याख्या अनेक प्रकार से की है। अनन्त पण्डित ने अपनी आर्यासप्तशती टीका में श्रीधर नाम स्वीकार किया है। वीरराघव ने इनके भवभूति नाम के सम्बन्ध में एक और विचार व्यक्त किया है कि इन्हें भगवान् शंकर (भव) ने स्वयं भिक्षु रूप में आकर भूति (ऐश्वर्य) प्रदान की थी, इसीलिए इनका नाम 'भवभूति' पड़ा। मालतीमाधव तथा उत्तररामचरित पर टीका करते हुए वीरराघव कहते हैं कि भवभूति का पैतृक नाम श्रीकण्ठ था परन्तु एक विशिष्ट पद्य की रचना के कारण उनका नाम भवभूति पड़ गया। मालतीमाधव के प्रसिद्ध टीकाकार जगद्धर की सम्मति में भी वास्तविक नाम श्रीकण्ठ ही है —

'नाम्ना श्रीकण्ठः प्रसिद्ध्या भवभूतिरित्यर्थः।'

इसी नाटक में दूसरे टीकाकार त्रिपुरारि भी इसी बात का समर्थन करते हैं —

'भवभूतिरिति व्यवहारे तस्यैव नामान्तरम्।'

इस प्रकार हम देखते हैं कि अधिकांश टीकाकारों की सम्मति में श्रीकण्ठ वास्तविक नाम है और भवभूति उपनाम। श्रीकण्ठनाम

पैतृक है पर बाद में ये उपनाम से ही प्रसिद्ध हो गये और पैतृक नाम पीछे छूट गया। इस विषय में महामहोपाध्याय डा० पी०वी० काणे का कथन है कि भवभूति के पद्य सूक्तिग्रन्थों तथा साहित्य-शास्त्र के ग्रन्थों में प्रचुर मात्रा में उद्धृत हैं परन्तु सर्वत्र वे भवभूति के नाम से उद्धृत किये गये हैं, श्रीकण्ठ नाम कहीं नहीं है। वास्तविकता है कि संस्कृत साहित्य में भवभूति नाम ही प्रसिद्ध रहा है और परवर्ती साहित्यशास्त्र के आचार्यों में इसी नाम से इनके नाटकों के पद्यों को उद्धृत किया है।

दार्शनिकों की गोष्ठी में 'भवभूति' उम्बेक नाम से प्रसिद्ध थे। उम्बेकाचार्य या भवभूति एक ही व्यक्ति हैं या भिन्न-भिन्न-इस विषय में विद्वानों में मतभेद है। वास्तव में यह विवाद कुछ समय पूर्व शंकर पाण्डुरङ्ग पण्डित ने वाक्पतिराज कृत 'गउडवहो' की भूमिका में उठाया है। उधर 'मालतीमाधव' के एक प्राचीन हस्तलेख में वे कुमारिलभट्ट के शिष्य बतलाये गये हैं। इसकी पुष्टि मालतीमाधव की एक प्राचीन हस्तलिपि के तृतीय अङ्क में उद्धृत 'इति श्रीभट्टकुमारिलशिष्यकृते मालतीमाधवे तृतीयोऽङ्कः' से होती है लेकिन मालतीमाधव के षष्ठ अङ्क की भूमिका में 'इति श्रीकुमारिलस्वामिप्रसादप्राप्तवाग्वैभवश्रीमदुम्बेकाचार्य विरचिते मालतीमाधवे षष्ठोऽङ्कः' उल्लिखित है। दशम अङ्क के अन्त में आये विवरण के अनुसार - 'इति श्रीमद् भवभूतिविरचिते मालतीमाधवे दशमोऽङ्कः' - इसे भवभूति कृत माना है। इस प्रकार के विवरण से यह शंका उत्पन्न होती है कि क्या भवभूति और उम्बेक एक ही थे। यह सत्य है कि उम्बेकाचार्य मीमांसा दर्शन के गणमान्य विद्वान् थे तथा कुमारिल भट्ट के शिष्य बतलाये गये हैं। उम्बेकाचार्य ने कुमारिल के श्लोकवार्तिक पर टीका लिखी है और वह टीका भवभूति के मालतीमाधव के 'ये नाम केचिदिह ___' श्लोक से प्रारम्भ होती है। इससे भवभूति

और उम्बेक के एक ही व्यक्ति होने की पुष्टि होती है।

स्थितिकाल – भवभूति के स्थितिकाल के सम्बन्ध में विशेष विवाद नहीं है। कल्हण ने लिखा है कि भवभूति तथा वाक्पतिराज के आश्रयदाता यशोवर्मा को कश्मीर नरेश ललितादित्य ने पराजित किया। शङ्कर पाण्डरङ्ग पण्डित ललितादित्य के राज्य का समय 695–732 ई० मानते हैं। डॉ० भण्डारकार के अनुसार यशोवर्मा की मृत्यु 753 ई० में हुई। भवभूति बाण के पश्चादवर्ती हैं तथा वामन (नवम् शती अन्तिम चरण) के पूर्ववर्ती हैं। वामन ने 'काव्यालङ्कार-सूत्रवृत्ति' में भवभूति के पद्यों को उद्धृत किया है। वे वाक्पतिराज (733 ई० के लगभग जीवित) से भी पूर्ववर्ती थे। अतः उनका समय 7वीं सदी के अन्तिम चरण से आठवीं सदी के मध्यभाग के बीच माना जा सकता है। डॉ० जंगासागर राय ने भी भवभूति का यही समय माना है। डॉ० कीथ ने उनका समय 700 ई० के आस-पास माना है।